5

मैं भी शिक्षक, तुम भी शिक्षक

भारती*

बच्चे अनेक खेल खेलते हैं। इन्हीं में से बच्चों की पसंद का एक खेल है- 'टीचर-टीचर' का खेल। इस खेल से न केवल उनका मनोरंजन होता है बल्कि बच्चे बहुत कुछ सीखते भी हैं। शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इस खेल का प्रयोग किया जा सकता है। कैसे? जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

रवि प्राथमिक शाला में शिक्षक के पद पर नया-नया नियुक्त हुआ है, उसके मन में बच्चों को पढ़ाने की ढेर सारी योजनाएँ हैं। सेवा पूर्व प्रशिक्षण के दौरान उसने बहुत-सी नई शिक्षण विधियों के बारे में पढ़ा है, इन विधियों को अपने दैनिक शिक्षक जीवन में उतारने के लिए उसने कई योजनाएँ बनाई हैं।

इस नई शाला में चौथी कक्षा के बच्चों से उसका अच्छा परिचय हो गया है। एक महीने तक हर बच्चे के लेखन, पठन, गृहकार्य, कक्षाकार्य पर पैनी नज़र रखते हुए वह समझ गया है कि इस कक्षा में भी वैसी ही स्थिति है जैसी कि लगभग हर अन्य कक्षाओं में होती है। यानि बच्चों को उनकी सीखने की गति एवं रफ्तार के अनुसार समूहबद्ध किया जा सकता है। चौथी कक्षा में *रमेश* और *मानवी* भी हैं, *रमेश* जो देख नहीं सकता और *मानवी* जो सुन नहीं सकती।

आज कक्षा की शुरुआत करते हुए उसने बच्चों से पूछा कि क्या वे शिक्षक-शिक्षक वाला खेल खेलना चाहेंगे? बच्चे पहले तो कुछ झिझके फिर एक बोला - क्या मैं शिक्षक बन कर अन्य बच्चों को सज़ा भी दे सकता हूँ? *रवि* कुछ उत्तर देता इससे पहले तीसरी पंक्ति के अंतिम बैंच पर बैठी *आशिमा* बोल उठी - क्या मैं बच्चों की कापियाँ भी जाँचूगी? *रोहित* को चिंता हुई - शिक्षक बन कर मुझे किसे पढ़ाना होगा? क्या बच्चे मेरी बात सुनेंगे? *रश्मि* ने पूछा - क्या मैं ब्लैकबोर्ड पर लिख पाऊँगी? *पवन* ने कहा - क्या चपरासी मेरे लिए भी पानी अथवा कोई संदेश लाएगा। *किरण* ने कहा - बड़ा माज़ा आएगा फिर तो कोई गृहकार्य या कक्षा कार्य नहीं करना पड़ेगा?

इस सारे शोरगुल में *रवि* को किसी के प्रश्न का उत्तर देने का समय नहीं मिल रहा था। उसने ज़ोर से अपना गला खँखारते हुए

**प्रवक्ता*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110016

कहा – सुनो-सुनो, अभी खेल शुरू नहीं हुआ है। पहले इस खेल के नियम तो जान लो। यह तो जानो कि खेलना कैसे है? अंक कैसे मिलेंगे? पढ़ाना किसे है, और पढ़ेगा कौन?

सभी शांत होकर उसकी बात सुनने लगे। रवि ने कहा – सभी बच्चे शिक्षक भी बनेंगे और विद्यार्थी भी। आप किसी को पढ़ाएँगे नहीं किंतु कापियाँ जाँचेगे और नंबर भी देंगे। 'हाँ' साथी छात्र को सज़ा देना, डाँटना, मना है। चलो, अब सभी जल्दी से तीन-तीन के समूह में बँट जाओ। मैं कुछ खाली पन्ने अपनी मेज़ पर रख रहा हूँ। जिस किसी को भी चाहिए वह ले सकता है, अन्यथा आप अपनी कच्ची कॉपी में भी काम कर सकते हैं। प्रत्येक समूह को अठ्ारह पन्नों की आवश्यकता होगी।

सभी बच्चों के तीन-तीन के समूह में बँटने के बाद दो बच्चे बच गए, *रवि* खुद इस समूह का तीसरा साथी बन गया। अब उसने सभी बच्चों को अपनी पाठ्यपुस्तक अथवा कक्षा में रखी कहानी की किताबों में से कोई एक किताब चुनने को कहा। खुद *रवि* ने नंदन (बाल पत्रिका) को चुना। *मानवी* ने चंपक की चित्रकथा चुनी तो रमेश ने अन्य विकल्पों के अभाव में अपनी पाठ्यपुस्तक का ही एक अनुच्छेद चुना।

रवि ने श्यामपट्ट पर 'आम', 'जामुन', 'अंगूर' लिख दिया और समूहों के सदस्यों में इसमें से एक नाम अपने लिए छाँटने को कहा। *रीमा* और *रोहित* की 'अंगूर' पर लड़ाई होने लगी तो *रश्मि* ने *रीमा* को यह कहकर 'जामुन' बना दिया कि जामुन से तो कितना अच्छा रंग भी किया जा सकता है। *रवि* के लिए उसके समूह के साथियो ने 'अंगूर' का नाम चुन दिया।

सभी छात्रों को अपनी चुनी हुई पुस्तकों में से एक अनुच्छेद बड़े ध्यान से पढ़ने का निर्देश मिला। सभी अपने चहेते शिक्षक की बात मानकर बड़े ध्यान से पढ़ने लगे। *कंचन* ने अपना अनुच्छेद जल्दी समाप्त कर, अगले निर्देश के लिए हाथ खड़ा किया। रवि ने उसे उसी अनुच्छेद को बहुत अच्छी तरह दुबारा पढ़ने का सुझाव देते हुए कहा कि यदि पहले ही बहुत अच्छी तरह पढ़ लिया है तो जब तक समूह के अन्य साथी अपना-अपना अनुच्छेद पढ़ें तुम चाहो तो आगे पढ़ सकती हो या फिर चुपचाप समूह साथियों के पढ़ने का इंतजार कर सकती हो। उसने चुपचाप इंतजार करना बेहतर समझा। यही निर्देश रवि ने बाकी समूहों के लिए भी दोहराया। जब सभी बच्चे तसल्ली से अपना अनुच्छेद पढ़ चुके तो रवि ने सभी समूहों के 'आम' नाम के विद्यार्थियों से हाथ खड़ा करने के लिए कहा एवं अगला निर्देश दिया।

अब 'आम' शिक्षक की भूमिका निभाएगा और अपने अनुच्छेद में से पाँच शब्दों का श्रुतलेख 'जामुन' और 'अंगूर' को देगा। 'जामुन' और 'अंगूर' श्रुतलेख खाली पन्ने पर लेंगे तथा पन्ने पर सबसे ऊपर लिखेंगे-

किसका अनुच्छेद – 'आम का'

शिक्षक का नाम – 'आम'

विद्यार्थी का नाम –

1. ..... 2. .....

3. ..... 4. .....
5. .....

इसके बाद 'आम' 'जामुन' का अनुच्छेद लेकर उसमें से भी पाँच शब्द बोलेगा और समूह के दोनों विद्यार्थी दूसरे खाली कागज पर लिखेंगे और तब 'किसके अनुच्छेद' में – 'जामुन' का नाम आएगा। यही कार्य 'आम' 'अंगूर' के साथ भी दोहरायेगा। इस प्रकार से आम कुल पंद्रह शब्द बोलेगा और समूह के साथी विद्यार्थियों के पास तीन-तीन पन्ने होंगें। विद्यार्थी अपने श्रुतलेख वाले पन्ने सँभाल कर रखेंगें। इसके बाद 'आम' की शिक्षक के रूप में भूमिका समाप्त होती है। रवि ने भी अपने समूह के 'आम' द्वारा बोले शब्दों को लिखा।

इसके बाद, प्रत्येक समूह में से अब रवि ने 'जामुन' को हाथ खड़ा करने के लिए कहा। अब शिक्षक की भूमिका में 'जामुन' था। 'जामुन' ने भी अपने अनुच्छेद में से, फिर 'आम' और 'अंगूर' के अनुच्छेद में से पाँच-पाँच शब्दों की इमला बोली। समूह के साथी विद्यार्थियों ने पहले ही रखे अलग कागज पर श्रुतलेख लिखा। एक समूह में थोड़ा शोर मचने लगा, पूछताछ करने पर पता चला कि 'जामुन' ने कुछ शब्द वही बोल दिए थे जो 'आम' ने भी बोले थे। *रवि* ने बीच-बचाव करते हुए सर्वसम्मति से नियम बनाया कि शब्दों का चुनाव, शिक्षक की भूमिका वाला बच्चा करेगा, अगर वह चाहे तो शब्दों को दोहरा भी सकता है। शब्दों को दोहराने से पहले लिखे उसी शब्द की जाँच भी हो पाएगी कि वह सही लिखा है या गलत और फिर से इस अभ्यास से अधिगम मज़बूत भी होगा।

'जामुन' की भूमिका के बाद अब 'अंगूर' की शिक्षक बनने की बारी आई, उसने भी पहले अपने अनुच्छेदों में से और फिर 'जामुन' एवं 'आम' के अनुच्छेदों में से पाँच-पाँच शब्दों का श्रुतलेख बोला। 'जामुन' की भूमिका की समाप्ति के बाद सभी विद्याथियों के पास तीस शब्दों और छः पन्नों पर लिखा श्रुतलेख होगा। तीन पन्ने एक शिक्षक के तथा तीन पन्ने दूसरे शिक्षक के। सभी शिक्षक अपने द्वारा बोली गई इमला के पृष्ठ समूह साथियों से ले लेंगें। इस प्रकार से प्रत्येक शिक्षक के पास छः पन्ने होंगे।

'मज़ेदार काम तो अब शुरू होगा,' *रवि* ने कहा – अब सभी शिक्षक अपनी-अपनी कापियाँ जाँचेंगे और अंक देंगें, किंतु ध्यान रहे, यदि शब्द पूर्ण रूप से सही है तभी अंक मिलेगा, आधे नंबर का कोई चक्कर नहीं है। प्रत्येक शब्द का एक नंबर होगा। बोलिए क्या आप सहमत हैं? सभी छात्र सहमत थे। यह काम उतना आसान नहीं था जितना छात्रों को लग रहा था। जाँचते-जाँचते *पंकज* एक जगह अटक गया तो उसने पूछा, "क्या मैं अनुच्छेद में देख सकता हूँ।" *रवि* ने सहमति में सिर हिलाया। अब पूरी कक्षा ध्यानपूर्वक कापियाँ जाँचने में जुटी थी। अपना जाँचकार्य खत्म करके, समूहों का अवलोकन करने के लिए रवि कक्षा में चहलकदमी करते-करते *मानवी, दीपक* और रमेश के समूह के पास खड़ा हो गया। *दीपक* बड़ी समझदारी से शिक्षक की भूमिका निभा रहा था। श्रुतलेख देते हुए उसने दो बातों का ध्यान रखा, पहली बात यह है कि शब्द बोलते

हुए उसने *मानवी* को छूकर इशारा किया कि वह शब्द बोल रहा है। दूसरी यह कि उसने शब्द को बेहद धीरे-धीरे उसकी घटक ध्वनियों एवं मात्राओं के साथ स्पष्ट उच्चारण सहित बोला, जिससे *मानवी* को उसके होंठ पढ़कर शब्द समझने में परेशानी नहीं हुई। *रमेश* की कॉपी जाँचने की बारी आई तो *दीपक* ने रमेश से पूछ-पूछ कर उसकी कापी जाँची। *मानवी* रमेश की कॉपी सुन नहीं सकने के कारण अच्छी तरह से नहीं जाँच पा रही थी तो उसने दीपक की मदद ली। *रमेश* ने बजाए खुद कॉपी जाँचने के रवि को बुला लिया। इस प्रकार से इस समूह में भी सभी की भागीदारी हुई।

बाकी समूहों में कुछ शिक्षक अपना जाँच कार्य न करके यह देखने में व्यस्त थे कि कहीं उनके साथी उनके अंक गलत तरीके से तो नहीं काट रहे। इसी बात से एक अन्य समूह में लड़ाई की नौबत आ गई तो *रवि* ने कहा कि आप अपना जाँच कार्य समाप्त कर लें और फिर देखते हैं कि इस समस्या को कैसे हल करें।

कापियाँ जाँचने के बाद *रवि* ने कहा - अब हस्ताक्षर भी करें। जाँचना तो फिर भी सरल था पर हस्ताक्षर!!

लगभग सभी छात्रों के लिए हस्ताक्षर करने का यह पहला मौका था, इसलिए सभी बेहद उत्साहित थे। *रोहित* ने समस्या को मुखरित करते हुए कहा, 'मैंने तो अभी तक अपने हस्ताक्षर बनाए ही नहीं हैं तो मैं क्या करूँ 'तो आप अपना नाम लिख दो,' *रवि* बोला।

सभी शिक्षक अपनी-अपनी कापियाँ जाँचने के बाद अपने छात्रों में बाँट दें, यदि छात्र को लगा है कि शिक्षक ने जाँचने में गलती की है तो शिक्षक से पुनर्विचार का केवल अनुरोध किया जा सकता है। अंतिम निर्णय शिक्षक का होगा। सभी छात्र अब अपना-अपना सुधारकार्य करेंगे, उसी पन्ने पर जहाँ गलती है, यानी कि प्रत्येक गलत शब्द को अनुच्छेद की मदद से पाँच-पाँच बार सही तरह से लिखना है। सुधार कार्य करके आप शिक्षक से जाँच करवाना ना भूलें। शिक्षक बने सभी बच्चे बड़े ही उत्साह से कार्य कर रहे थे तभी भोजनावकाश की घंटी बज गई।

❑❑❑